

सड़क दुर्घटनाओं में समाज और तकनीकी का समन्वयात्मक विश्लेषण

अनिल कुमार गोयल

शोध छात्र समाजशास्त्र

जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर म.प्र.

शोध-सार

सड़क दुर्घटनाएं आजकल बहुत आम हो गई हैं। जैसे-जैसे लोग ऑटोमोबाइल खरीद रहे हैं, सड़क दुर्घटनाओं में दिन-प्रतिदिन वृद्धि हो रही है। लोग भी अब अधिक लापरवाह हो गए हैं। बहुत से लोग यातायात नियमों का पालन नहीं करते हैं। विशेष रूप से बड़े शहरों में, परिवहन के विभिन्न तरीके हैं। सड़कें संकरी होती जा रही हैं और शहर अधिक आबादी वाले हो गए हैं। वृहत्तर ग्वालियर में सड़क दुर्घटनाएँ होना तय है। इनका प्रमुख कारण सड़क प्रबंधन सही नहीं है। रोजाना सड़क दुर्घटनाओं के बारे में कम से कम एक या दो समाचार पढ़ने के लिए मिलते हैं। वे संसाधन के साथ-साथ जीवन की हानि भी करते हैं। सड़क पर होने पर लोगों को अधिक सावधान रहने की जरूरत है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप किस परिवहन साधन से हैं। यहां तक कि पैदल चलने वाले भी इन घटनाओं के बढ़ने के कारण सुरक्षित नहीं हैं। शहरों में बढ़ते वाहन और जनसंख्या के अनुपात में सड़क निर्माण नहीं होता है तथा निम्न गुणवत्ता तथा तकनीक से निर्मित सड़क को अधिक क्षति होती है।

शोध-प्रपत्र

वर्तमान समय में वृहत्तर ग्वालियर की सड़कों का संबंध तकनीकी युक्त हो चुका है, जिसमें विभिन्न प्रकार की तकनीकी शामिल हैं ट्रैफिक सिग्नल, यू टर्न, लेफ्ट टर्न, वृक्षों पर रेडियम फ्लारेंस लगना (पीले एवम् लाल), जेबरा क्रोसिंग, डिवाइडर ये सभी साधन तकनीकी युक्त है, जो सड़क दुर्घटना को रोकने में अहम् भूमिका निभाते है।

सड़क यातायात दुर्घटना को दुर्घटना (टक्कर, पलटना या फिसलना) के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो सार्वजनिक यातायात के लिए खुली सड़क पर होता है, जिसके परिणामस्वरूप या तो चोट या जीवन की हानि या संपत्ति को नुकसान होता है। इनमें से किसी का एक संयोजन, जिसमें कम से कम एक चलती गाड़ी शामिल है। वाहनों की आबादी तेजी से बढ़ रही है, लेकिन सड़क की जगह नहीं है “ड्राइविंग कौशल, सुरक्षा जागरूकता और सड़क का पता लगाने के लिए कड़े परीक्षण ड्राइवरों का शिष्टाचार। लोग अपने जीवन का 30 प्रतिशत से अधिक सड़कों पर व्यतीत करते हैं। कई वैध लाइसेंस वाले चालकों को यातायात नियमों की कोई जानकारी नहीं है।”¹

राज्य सरकारों के साथ संयुक्त भागीदारी में, केंद्र सरकार देश भर में हादसों को कम करने के उपाय कर रही है। “दुनिया भर में हर दिन लगभग 16000 लोग सभी प्रकार के से मरते हैं। बीमारी के वैश्विक बोझ का 12 प्रतिशत प्रतिनिधित्व करती हैं, तीसरा सबसे अधिक समग्र मृत्यु दर का महत्वपूर्ण कारण और 1 से 40 वर्ष के बीच मृत्यु का मुख्य कारण”²

आज दुनिया भर में सड़क हादसे भयावह तरीके से बढ़ रहे हैं। हमारे भारत में उतरोतर सड़क दुर्घटनाओं की संख्याओं में बेहताशा

वृद्धि हो रही हैं। मृत्यु के इस खेल में हजारों बेकसूर लोग मारे जाते हैं। वाहनों की बढ़ती संख्या तथा लापरवाही के कारण आज सड़क पर चलना या वाहन चलाना जोखिम भरा हो गया है। यातायात नियमों की अवहेलना तथा नशे में गाड़ी चलाना, कम उम्र के लडकों द्वारा दुपहिया वाहनो का स्टंट आदि के कारण सड़क हादसे हो जाते हैं। प्रत्येक सड़क दुर्घटना में क्षति होती है मगर ट्रक और बस जैसे बड़े वाहनों के साथ घटित हादसों में अधिक जानमाल का नुकसान होता है।

“राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक टोल संग्रह (छम्ब) के द्वारा ट्रैफिक का नियंत्रण किया जाता है। एक टोल प्लाजा से दूसरे टोल प्लाजा की दूरी 60 किलोमीटर होती है, जिसका फॉस्टैग से संबंध होता है, जो ट्रैफिक नियंत्रण में अहम् भूमिका निभाता है, अलग-अलग वाहनों का टॉल पर अलग-अलग टैक्स देना पड़ता है।”³

देश में आज एक ऐसा बड़ा वर्ग बन गया है, जिन्होंने सड़क हादसों में अपने कीमती अंग खो दिए हैं तथा अपाहिज होकर अपना जीवन काट रहे हैं। उनके जीवन की पीडाओं को देखकर विज्ञान की इस प्रगति से दिल उब सा जाता है। हमारा सड़क परिवहन तंत्र आज भी 50 के दशक के ढर्रे से चल रहा है। पुरानी तकनीक के ट्रक और अनपढ़ ड्राइवर कम सैलरी तथा प्रशिक्षण के अभाव, बिना जांच पड़ताल पैसे के बल आसानी से ड्राइविंग लाइसेंस मिल जाने के कारण कई प्रकार की दुर्घटना कर देते हैं।

देश के अधिकतर वाहन चालकों को सड़क परिवहन के नियमों का भी ज्ञान नहीं है। यही नासमझी आगे चलकर भयावह सड़क हादसों को आमंत्रित करती है, जिनमें कई बेकसूर लोग भी मारे जाते हैं। हाइवे तथा सड़कों के किनारे विभिन्न दुकानें एवं शराब की दुकाने भी सड़क हादसों को बढ़ाने में कारगर है। नशे अथवा जल्दबाजी में हादसे

घटित हो जाते हैं। सभी को सड़क पर, पैदल या ऐसी कार से बहुत सावधान रहना चाहिए, जिसका कोई महत्व नहीं है। हम उन उपायों को अपना सकते हैं जो सड़क दुर्घटनाओं को रोकने में सहायक हो।

“एन.एच.ए.आई. ने सुरक्षा के लिए उच्च तकनीक और ऊँचे सुरक्षा मापदंड अपनाएँ, जिनसे सड़क दुर्घटनाएँ कम हो सड़क की लम्बाई बढ़ने के साथ सड़क दुर्घटना में कमी आई है। एन.एच. निर्माण के दौरान कई सुरक्षा मापदंड अपनाएँ, सड़क निर्माण को सीधा बनाया कर्ण कम रखे गए, कर्ण वाले स्थान पर रेडियम एवम् साइनेज बोर्ड लगाए, जिससे रात में वाहन चालक को सड़क साफ नजर आए, रोड़ बनाई गई और ग्रेड सेपरेटर बनाए, जिससे सड़क दुर्घटना कम हुई है।”⁴

मृत्यु दर को कम करने के लिए सड़क दुर्घटनाओं को रोकने की आवश्यकता है। हर साल हजारों लोग सड़क दुर्घटनाओं में अपनी जान गंवाते हैं। बच्चों को कम उम्र से ही यातायात नियमों के बारे में पढ़ाया जाना चाहिए। उन्हें जीवन का मूल्य सिखाया जाना चाहिए और वे इसे कैसे सुरक्षित रख सकते हैं। “विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़ों के अनुसार, सड़क यातायात से होने वाली मौतें दुर्घटनाओं से होने वाली सभी मौतों का लगभग 25 प्रतिशत हिस्सा चोटों का है।”⁵

सरकार को यातायात नियमों की अवहेलना करने वाले लोगों के लिए और कड़े कानून पारित करने होंगे। लिंग की परवाह किए बिना इन कानूनों को तोड़ने का दोषी पाए जाने पर लोगों को भारी जुर्माना देना चाहिए या सख्त कार्रवाई करनी चाहिए। इसी तरह, माता-पिता को ड्राइविंग करते समय फोन का उपयोग न करके छोटे लोगों के लिए एक उदाहरण स्थापित करना चाहिए। साथ ही, दुर्घटना की

संभावना से बचने के लिए उन्हें हमेशा अपना हेलमेट और सीटबेल्ट को पहनना चाहिए।

सड़क दुर्घटनाओं में मानवीय मनोवृत्तियाँ एवं मनोवेग का विशेष योगदान है। सड़क पर वाहन चलाते समय दोनों पर नियंत्रण रहना चाहिए, जिससे दुर्घटनाओं को रोका जा सके।

“वर्तमान समय में बाजै (केन्द्रीय आधुनिक आवागमन तंत्रिकीय तंत्र) संस्था के द्वारा पूरे सड़को का प्रबंधन व गुणवत्ता देखी जाती है, जिससे केन्द्र और राज्य सरकारों में तारतम्यता बनी रहे”⁶

मित्रा के अनुसार— “भारत में सड़क दुर्घटनाएं और सड़क सुरक्षा (1970) में सड़क दुर्घटनाओं के विभिन्न पहलुओं की जांच की और राय दी कि सड़क सुरक्षा की समस्या इतनी बड़ी है कि इसे अकेले किसी संघ द्वारा निपटाया नहीं जा सकता है। वे कहते हैं कि राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए और भारत के प्रत्येक नागरिक के सहयोग की जरूरत है और विशेषज्ञ की सहायता।”⁷

वृहत्तर ग्वालियर में सड़क दुर्घटनाएं दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है, जिस कारण शहर के लोग अशिक्षित एवम् लापरवाह होने के कारण स्वयं भी होते है और दूसरों को भी करते है। ग्वालियर शहर का प्रशासन, नगर पालिका निगम, स्मार्ट सिटी डवलपमेंट आथॉरिटी, पब्लिक एवम् वर्क डिपार्टमेंटर इन सबका दायित्व सड़क दुर्घटना को रोकने के लिये उचित प्रबंधन करे। ट्रैफिक नियमों का पालन करे, जिससे यातायात पुलिस तथा यातायात नगर के थाने अधिक सख्ती करे, तभी शहर दुर्घटना से मुक्त रहेगा।

वर्तमान समय में सड़क दुर्घटना में समाज और तकनीक का बहुत बड़ा समन्वय है। तकनीक का संबंध सड़क प्रबंधन, गुणवत्ता और

शहर का ट्रैफिक संचालन से है। अधिकतर लोग तकनीकी की जानकारी नहीं रखने के कारण बहुत से लोग सड़क दुर्घटना के लिये स्वयं जिम्मेदार रहते हैं उन्हें सड़क संबंधित नियमों की जानकारी का अभाव होता है। वर्तमान समय में तकनीकी का विकास होने के कारण नियमों के प्रति उनका किसी प्रकार की रुचि नहीं होती है। वाहन चलाते समय एकाग्रता, सान्द्रता एवम् लक्ष्यगामी गतंव्य से भटक गये, जिससे दुर्घटना हो जाती है।

निष्कर्ष—

महानगरों में सड़क दुर्घटना को कम करने के लिये समाज और तकनीकी का समन्वय आवश्यक है। धीरे-धीरे लोग सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक होंगे, सड़क संबंधित तकनीकी को समझकर नयी शैली की शुरुआत करेंगे, जिससे सड़क दुर्घटना कम से कम हो, लोग जितना जागरूक होंगे उतनी ही दुर्घटनाएँ कम होगी। सड़क दुर्घटनाओं को कम करने के लिए सड़क प्रबंधन, गुणवत्ता, देखरेख, मानवीय मूल्यों की सुरक्षा इन सबका विशेष ख्याल रखना पड़ता है, लोग दुर्घटनाओं से बचे, उससे पूर्व प्रशासन और नागरिक का आपस में निश्चित तालमेल हमेशा चाहिए, जिससे सड़क दुर्घटनाओं को रोका जा सके।

संदर्भ सूची

- 1— जे सत्यनारायण, 'सड़क परिवहन उद्योग की लागत संरचना', परिवहन जर्नल, वॉल्यूम ग्ग. 3 मार्च 1971, पृ.9
- 2— आर.एन. मित्रा, 'भारत में सड़क दुर्घटनाएं और सड़क सुरक्षा' नागरिक मामले', जनवरी, 1970, पृ.24

- 3- एनुअल रिपोर्ट 2021-2022, पृष्ठ-19
- 4- दैनिक भास्कर 31 जुलाई 2022, ग्वालियर
- 5- आर.एन. मित्रा, 'भारत में सड़क दुर्घटनाएं और सड़क सुरक्षा' नागरिक मामले', जनवरी, 1970, पृ.32
- 6- एनुअल रिपोर्ट 2021-2022, पृष्ठ-23
- 7- के.टी. पिल्लई, 'रोड एक्सीडेंट्स : द मैन बिहाइंड द व्हील', जर्नल ऑफ परिवहन प्रबंधन, अप्रैल 1989, पृ.42



Contributors Details:

अनिल कुमार गोयल
शोध छात्र समाजशास्त्र